दूरी ३६ कि.मी. है । पटना से ५४ कि.मी. दूर है ।

बिहार शरीफ

हम राजगिरि के लिये रवाना हुए, वह प्राचीन राजगिर जहां भगवान महावीर सैकड़ों वार ठहरते थे, जिसका आगमों के स्थान पर सवसे ज्यादा वर्णन है । राजगिर के रास्ते में इतिहासिक सूफी संत का स्थान पड़ता है । जिसे विहार के शरीफ के नाम से पुकारा जाता है । हम लोग विहार के मध्य में जा रहे थे, दो घण्टे के लम्वे सफर के वाद हम विहार शरीफ उतरे । सारे विहार में इस मुस्लिम फकीर की पूजा होती है । लोग इसकर मजार के पास मानता का धागा वांधते हैं । पूरा होने पर धागा खोल जाते हैं, पर जनसाधारण की आस्था का केन्द्र है । सूफी सन्तों का मनवता के प्रति प्रेम संसार को नये मार्ग का संदेश देता रहा है ।

हम इस शहर में उतरे मजार के पास आये, चारों तरफ सूफी संतों के स्मारक थे, हरे कपड़े के ध्वज लहरा रहे थे, चिराग जल रहे थे, प्रशाद की दुकानें थीं, फूलों व कपड़ों की चादरें चढ़ाने की दुकानें थीं । हमने भी उस फकीर की मजार पर हाजिरी दी । हमें जन-साधारण से सम्पर्क करने का अच्छा माध्यम मिला । पता नहीं यह लोग जैन यात्रियों की इतनी इज्जत क्यों करते हैं । जन साधारण में जैन यात्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है ।

यह शहर इतना वड़ा नहीं । पर्यटन स्थल के रूप में इसकी मान्यता विहार में ही नहीं समस्त विश्व भर में है । हम यहां के वाजारों में घूमे । यहां विहार के पिछड़ेपन के दर्शन हुए, गरीवी रेखा के नीचे रहते लोगों को करीव से देखने का अवसर मिला । यहां अविद्याा के कारण अज्ञानता

के हर कदम पर दर्शन होते हैं । इस अविद्या का कारण सरकार की अव्यवस्था है । आजादी के ५० वर्ष बीत जाने पर भी यहां लोग हजारों साल पुरानी परम्परा से बाहर नहीं निकल पाये । गरीबी के साथ-साथ यह अस्पृश्यता, पशुबलि, जात-पात का पालन बड़े जोर शोर से होता है । दोपहर हो चुकी थी, यहां एक जैन मन्दिर होने की सूचना मिली, पर समय कम होने कारण हमने आगे जाने का फैसला किया । बिहार शरीफ की यात्रा के बाद हमने अगले स्टेशन की बस पकड़ी । बिहार शरीफ से दो रास्ते दो तीर्थों को जाते हैं । पहला है पावापुरी, नालन्दा राजगिरि । दूसरा सीधा राजगिर। हमने दूसरा रास्ता चुना क्योंकि वहां से राजगिर नजदीक पड़ता था । दूसरा हम वहां कुछ दिन रुकना चाहते थे । हम बस में सवार हुए तो हमें छोटी सी रेलवे लाईन दिखाई दी । कहते हैं कि कभी अंग्रेजों ने यह लाईन बिछाई थी, पर आज यह मार्ग बन्द है।

इतिहास :

जैन शास्त्रों में यह वर्णित है कि जब अजातशत्रु कोणिक ने राज्य के लिये अपने पिता को काराग्रह में डाल दिया, फिर उसने अपने नाना चेटक के साथ वैशाली का रथ मुशल संग्राम किया । कोणिक के पिता बिम्बसार श्रेणिक थे । सारा परिवार महावीर प्रभु का भक्त था । वैशाली की राजुकमारी महारानी चेलना राजा श्रेणिक की पत्नी थी । यही कोणिक की माता थी । राजा कोणिक मगध का सम्राट और प्रभु महावीर का परम भक्त था । वह बौद्ध धर्म का सम्मान करता था, वह वह जीवन आगम्य से वह बौद्ध धर्म को मानता था । एक दिन कोणिक अपनी माता को प्रणाम करने के लिये महल में आया तो रानी चेलना ने कोणिक का प्रणाम

अस्वीकार कर दिया । राजा ने इसका कारण पूछा तो रानी चेलना ने उसे एक घटना सुनाई जिसका इस शहर से बहुत सम्बन्ध है । रानी चेलना ने कहा मैं तुम्हें राजा कैसे मान लूं ? तू तो दुष्ट है, जब तू मेरे गर्भ में था तब मेरे मन में राजा श्रेणिक के कलेजे का मांस खाने की इच्छा हुई थी । मैं दुःखी रहने लगी । तेरे पिता से मेरा दुःख देखा न गया । उन्होंने अभयकुमार की समझ से मेरी यह इच्छा पूरी कर दी। मुझे तुम्हारे भविष्य का भी पता चल गया कि तू अपने पिता के लिये कष्टकारी है । मैंने अपना गर्भ गिराने की चेष्टा की, पर मैं असफल रही । फिर तेरा जन्म हुआ तो मैंने तुझे खड़ी पर फिंकवा दिया । अचानक राजा श्रेणिक अरुड़ी के पास आये, वह तुम्हें गंदगी के ढेर से उठा लाये । तुम्हारी अंगुली को मुर्गे ने खा लिया था । तुम्हारे शरीर में पीक पड़ चुकी थी । उन्होंने उस पीक को अपने मूंह से चूसा, तुम्हारा हर प्रकार से ध्यान रखा । मुझे मेरे इस कार्य के लिये उपालम्ब दिया । मैं शर्मसार थी । अब तूने अपने भाईयों को मारा, मेरे पिता को मार पीटकर, अपने पिता को तूने कारागृह में डाल दिया है । इस घोर पाप के बाद तू राजा बनकर मेरे को मूंह दिखाने आया है। तुझे अपने कृत्य पर शर्म आनी चाहिये । मैंने तुझे जन्म देकर अपनी कोख को कलंकित किया है, तू दुष्ट है, मेरी नजर से दूर हो जा, मुझे अपने पति की शरण चाहिये तू हम लोगों को मौत दे दे ।''

रानी चेलना की फिटकार का श्रेणिक पर गहरा असर हुआ । वह हथौड़ा लेकर कारागृह में पहुंचा, वहां राजा श्रेणिक बेड़ियों से जकड़े जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहे थे । ज्यों ही उन्होंने श्रेणिक को हथौड़ा लेकर आते देखा, तो श्रेणिक सोचने लगे, पहले तो यह मुझे हंटरों से पीटता था ।

अब हथौड़ा लेकर आया है, ऐसी मौत से तो मेरा मरना अच्छा है ।" राजा श्रेणिक के पास एक अंगुठी थी जिसके अंदर जहर भरा हुआ था, ज्यों ही श्रेणिक राजा के करीब पहुंचा तो श्रेणिक ने अंगूठी से हाथ पर जहर डाला और अपनी जीवन की इहलीला समाप्त कर ली ।"

राजा की मृत्यु से कोणिक को बहुत गहरा आघात पहुंचा । अब उसका मन राजगृह नगरी से उच्चाट हो गया । वैशाली का वह पहले विनाश कर चुका था । उसने एक नया नगर चम्पा बसाने की योजना बनाई । पर उसके पुत्र राजा उदयन ने पाटलीपुत्र बसाया।

जैन दृष्टि में राजगिरि ही सिद्धक्षेत्र तीर्थ है । इतिहास व संस्कृति का संगम है । राजगिरि को जैन व बौद्ध ग्रन्थों में राजगृह के नाम से जाना जाता है । इसके वर्णन से सारे आगम भरे पड़े हैं । अनेकों तीर्थंकरों ने धर्म प्रचार के लिये इस शहर को चुना । इस शहर में प्रभु महावीर के १४ चतुर्मास हुए । यहां का राजा बिम्बसार श्रेणिक प्रभु महावीर का परम भक्त था । उसकी रानी चेलना वैशाली की राजकुमारी थी । दिगम्बर परम्परा के अनुसार प्रभु महावीर ने अपना प्रथम उपदेश यही दिया था । श्वेताम्बर परम्परा की अनेकों इतिहासिक घटनाओं का वर्णन से राजगृह जुड़ा हुआ है । हर जैन आगम इस सुवाक्य से प्रसन्न होता है । "तेणं कालेणं, तेणं समणे रायगिहा नाम नयर होथा ।"

उस काल में राजगृह नाम का नगर था । इस नगर में धन्ना शालिभद्र सेठ पैदा हुए, जिनकी दीक्षा का वर्णन अनुपम है । शालिभद्र की माता इतनी सम्पन्न थी कि उसने नेपाल देश के व्यापारियों से समस्त कम्बल खरीद लिये थे । शालिभद्र उसकी इकलौती संतान थी । फिर ३२ पत्नियों के भोग में दिन रात डूबा रहता । फिर ऐसा प्रसंग आया उसके

समस्त परिवार ने धन सम्पदा छोड़ प्रभु महावीर के चरणों में दीक्षा ली ।

यही अभयकुमार मंत्री था जिसकी वुद्धि का सिक्का सारा संसार मानता था, फिर यहां चोरों का उत्पात हुआ । रोहिणी चोर ५०० चोरों का राजा था, भी यहां रहता था। जैन इतिहास की प्रसिद्ध घटनाएं अर्जुन माली व सेठ सुदर्शन यही के रहने वाले थे । यहां रहने वाले श्रेणिक ने किसी कारण वौद्ध धर्मावलम्वी वन गया था । परन्तु एक घटना ने उसका जीवन ही वदल कर रख दिया । उस घटना का वर्णन किये विना राजगृह का महत्व अधूरा ही रहता है । यह विवरण उत्तराध्ययन सूत्र में उपलव्ध है । यह प्रेरक प्रसंग है जिसने राजा श्रेणिक की जीवनधारा को वदलकर रख दिया ।

राजा श्रेणिक व अनाथिमुनि :

एक वार राजगृही नगरी का राजा श्रेणिक वन विहार के लिए निकला । वरसात का मौसम था । फल-फूलों में उपवन लहरा रहे थे । उस वन का नाम मण्डीकुक्षी चैत्य था । राजा सपरिवार वन विहार को निकला था । उसने वन में एक मुनि को ध्यानस्थ अवस्था में देखा । वह मुनि नवयुवक था । रूप व लावण्य उसका परिचय दे रहे थे । रूप लावण्य में वह धरती पर उतरा देवता लगता था । इतना सुन्दर नवयुवक मुनि क्यों वना ? यह प्रश्न श्रेणिक के मन में अंगड़ाईयां ले रहा था । आखिर राजा श्रेणिक ने पूछा, "हे नवयुवक ! तुम्हारे खाने-पीने के दिन हैं, तुम मुनि क्यों वन गए ? कृप्या मुझे कारण वताएं !" यह प्रश्न सांसारिक आत्माओं के मन में उभरता रहता है । अकसर संसार के लोग सोचते हैं कि मुनि जो वनता है किसी मजवूरी के

कारण बनता है । लोगों ने तो कहावत बना रखी है :-

"नार मुई, सब सम्पति नासी, मुंड मुंडाये, भये सन्यासी !"

स्त्री मर गई, सम्पति का नाश हो गया । दोनों तरफ से चोट पड़ी फिर सिर मुंडाया और सन्यासी बन गये । लोगों की सोच मुनि जीवन के बारे में इतनी निम्न स्तर की है ।

मुनि ने कहा, "राजन् ! मैं अनाथ था, इसलिये साधु बन गया ।" राजा ने सोचा इसको मेरी बात ठीक ढंग से समझ नहीं आ रही है । इसे शायद यह पता नहीं कि मैं कितना बड़ा सम्राट हूं, कितने राजा मेरे अधीन हैं, कितनी विशाल मेरी सेना है, कितना बड़ा कोष है । हर प्रकार से मैं सम्पन्न हूं, मैं क्यों न इस मुनि का नाथ बनूं ?

राजा श्रेणिक ने प्रत्यक्ष रूप से कहा, "मुनि ! अगर तुम्हारा कोई नाथ नहीं तो कोई बात नहीं, मैं तुम्हारा नाथ बनता हूं ।"

राजा श्रेणिक की बात सुनकर मुनि को राजा की अज्ञानता पर तरस आया, पर उन्होंने स्पष्ट कहा, "राजन् ! तू तो स्वयं अनाथ है, तू मेरा नाथ कैसे बनेगा?" सामने राजा श्रेणिक है, जानते भी हैं, राजा सामने खड़ा है ऐसी स्थिति को जानकर राजा को अनाथ कहना मुनि के अभयता का प्रतीक है ।

इतनी बात सुनकर राजा अवाक रह गया । उसने पहले कभी ऐसा नहीं सुना था । इतिहास के ये बोल ऐसे हैं कि जो अपने आप में महत्व रखते हैं । कभी किसी राजा को कोई भिक्षु कहे कि तू स्वयं अनाथ है, मेरा नाथ कैसे बनेगा ? यह मुनि की स्पष्ट भाषा है ये घोष के माध्यम से मुनि ने राजा को सच्ची बात बता दी।

राजा श्रेणिक ने सोचा कि यह मुनि अभी भी मेरी बात

ठीक तरह से नहीं समझ रहा मैं इसे स्पष्ट रूप से बताता हूं, "हे मुनि ! मैं मगध देश का सम्राट श्रेणिक हूं, यह महल, हाथी, घोड़े, कोष, सेना सब मेरा है । मैं तुम्हें निमन्त्रण देता हूं कि इस मुनि वेष को छोड़कर मेरे महलों में राजकुमार सा जीवन व्यतीत करो, तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा, मैं तुम्हारा नाथ हूं, तुम्हारे खाने-पीने व भोग-विलास के दिन हैं । संसार के भोग भोगने के बाद साधु बन जाना ।"

अनाथी मुनि का उत्तर

राजा श्रेणिक की बात सुनकर अनाथी मुनि ने कहा, "राजन् ! जिसे तुम नाथ बनना कहते हो, यह तुम्हारी भूल है । इस प्रकार की विभूति तो मेरे पास भी थी, पर इसमें तुम्हारा क्या है ? वास्तव में यह भौतिक सोच ही तुम्हें अनाथ बना रही है। राजन् मैं तुम्हें अपनी कथा सुनाता हूं, इसे ध्यान से सुनो । कोशाम्बी नगरी के सेठ का मैं पुत्र था । मेरे पास अथाह सम्पदा थी । शायद किसी राजा से बढ़कर मेरी धन-सम्पदा थी, मैं उनका इकलौता पुत्र होने के कारण उस सम्पति का स्वामी था । मेरे माता-पिता मुझे बहुत चाहते थे, वह मेरे पर हर चीज लुटाते थे । मेरी पत्नी सुन्दर थी, जो मेरे प्रति पूरी तरह समर्पित थी । मेरी जीवन यात्रा संसार के भोग भोगते हुए चल रही थी । मुझे किसी प्रकार का भय नहीं था । मैं समृद्धिशाली जीवन जी रहा था । मेरी प्रतिष्ठा नगर में चारों ओर थी । मैं गरीबों के संरक्षक के रूप में जाना जाता था । एक बार अशुभ कर्मोदय से मेरी आंखों में भयंकर रोग उत्पन्न हो गया । यंत्र, मंत्र, तंत्र तथा औषधि से हर प्रकार से मेरा इलाज करवाया गया । पर ज्यों-ज्यों मेरा उपचार होता गया, मेरा रोग बढ़ता गया । सब लोग मेरा ध्यान रखते । मेरी माता दिन रात मेरा ध्यान रखती । मेरे पिता ने अपना धन पानी

की तरह बहा रहे थे, परन्तु मुझे कहीं से भी आराम नहीं मिल रहा था । मेरी पत्नी हर समय मेरा ध्यान रखती थी । सारी रात जागकर मेरी सेवा करती, पर माता, पिता, पत्नी धन-सम्पदा में से कोई भी मेरा दुःख काम न कर सका, इन सबमें मेरा कोई भी नाथ न बन सका, मैं अनाथ रहा ।"

एक रात्री मैंने सोचा, सब उपचार कर लिए, अब धर्म रूपी औषधि से उपचार करना चाहिए । मैंने सोचा अगर मैं सुबह रोग मुक्त हो गया, तो रोग मुक्त होते ही दीक्षा ग्रहण कर लूंगा ।"

मैं सुबह उठा, मेरा रोग जा चुका था । मैंने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार प्रभु महावीर से दीक्षा ग्रहण की । मैंने उन सब कारणों से त्यागा, जो मुझे अनाथ बनाते थे । मुनि बनते ही मैं अपनी आत्मा का नाथ रूप बन गया हूं । यह मेरी नाथ की परिभाषा है । संसार से के भोग-विलास किसी का सहारा नहीं बनते । मुझे नाथ-अनाथ की परिभाषा समझ में आ गई है ।

राजा श्रेणिक ने मुनि की त्याग भरी बात सुनी, वह भी सपरिवार प्रभु महावीर का सेवक बन गया । इस घटना ने राजा श्रेणिक को जैन धर्म का भावी तीर्थंकर बना डाला । यह राजा श्रेणिक था जो सारा जीवन प्रभु महावीर की भक्ति करता रहा, उसका पुत्र कोणिक भी प्रभु महावीर का भक्त था ।

इसी नगरी में पुणिया जैसा श्रावक पैदा हुआ, जिसके दरवाजे पर राजा श्रेणिक एक समायिक का फल मांगने गया था । मात्र भगवती सूत्र में हजारों बार इस नगर का नाम आया है ।

बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत के चार कल्याणक यहां हुए, उनमें जीवन से संबधित अनेकों प्राचीन स्थान हैं ।

इसके अतिरिक्त अनेक उतार-चढ़ाव इस नगर ने देखे हैं । यह नगर पांच पहाड़ों के मध्य वसा हुआ है, पर प्राचीन काल में इस का विस्तार नालन्दा तक था । सूत्रकृतांग सूत्र में नालंदा को इस का मुहल्ला माना गया है । श्रेणिक से पहले यह नगर सुरक्षित नहीं था । उसने इसका पुर्ननिर्वाण कराया । एक भव्य किले के चार-दीवारी आज भी शहर के वाहर देखी जा सकती है । यह चार दीवारी अव खण्डहर के रूप में विहार में है।

जैन तीर्थ के इलावा महात्मा वुद्ध का यहां काफी आगमन रहा । महात्मा वुद्ध से संवंधितकारी स्मारक यहां देखे जा सकते हैं । संसार भर के वौद्ध, जैन पांचों पहाड़ियों की यात्रा करते हैं । वौद्धों की एक संगीती यहां के एक पहाड़ पर हुई थी । इस पहाड़ पर इतिहास गर्म पानी के भी कुंड हैं, जिनका वर्णन भगवान महावीर ने भगवती सूत्र में किया है । जमीन पथरीली है, इसी कुंड के ऊपर मन्दिर है । इस सदी के प्राचीन मन्दिरों ने खण्डहर व शिव मन्दिर हैं । गर्मकुण्ड पर हिन्दु मन्दिर हैं । यहां मुस्लिम धर्म का मुकदस कुण्ड हैं ।

इस शहर में गुरु नानक देव जी पधारे थे । उनकी स्मृति में यहां एक गुरुद्वारा है । यहां ठण्डे पानी का एक कुण्ड है । इस तरह से यह नगर हर धर्म में संवंधित अंतराष्ट्रीय शहर है । इस शहर का मात्र श्रेणिक से ही संवध नहीं, यह श्रेणिक परिवारों के अनेकों राजकुमार व राजकुमारियां पोत्र-पोत्रियां ने यहां महावीर से साधु जीवन ग्रहण किया । यहां मेघकुमार को प्रतिवोध हुआ था । अनेकों लोगों की जीवनधारा का वदलाव लाने वाले नगर की ओर हम अग्रसर हो रहे थे। यह परम पावन भूमि थी । जिसका कण-कण पवित्र था । हम वन्दनीय, पूज्नीय भूमि पर हमारे

कदम बढ़ रहे थे । राजगिर में शांत पहाड़ों के नाम इस प्रकार हैं विपुलांचल, रत्नगिरि, उदयगिरि, स्वर्णगिरि, वैभारगिरि । वैसे तो पांचों पहाड़ महत्वपूर्ण हैं यहां तीर्थंकरों के समोसरण आए थे । इन पर्वतों की चोटियों पर अनेक जैन मन्दिर हैं । उदयगिरि पर्वत पर बौद्धों का शांति स्तूप है । यहां जरासंध का किला है । इस के अतिरिक्त यहां स्वर्ण भण्डार मणिकार मठ, वैभवगिरि पर ११ गणधरों के चरण हैं । मैंने पहले लिखा है कि राजगृह का हर पत्थर जीवत इतिहास है । इस नगर के प्राचीन नाम चरणपुर, ऋषभपुर, कुसमपुर, भूमति, गिरिधर, क्षतिफल, पचवैभव राजगृह रहे हैं । वर्तमान में यह नगर राजगिरि कहलाते हैं । शाम को हम बस द्वारा राजगिरि बस स्टैंड पर उतरे, वहां बस अड्डे से यहां के दार्शनीय स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त करनी थी । बस स्टैंड पर ही श्वेताम्बर एवं दिगम्बर जैन मन्दिरों के सूचना केन्द्र थे । इतने लम्बे सफर के बाद हमने चाय पीकर थकान दूर की । राजगिर में संसार के कोने-कोने से बौद्ध आते हैं। यहां बौद्ध मन्दिर हैं । वहां हर प्रकार की सुविधा वाले होटल भी हैं । हम सर्वप्रथम दिगम्बर जैन मन्दिर गए । यहां प्राचीन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के दर्शन किए । यह मन्दिर काफी प्राचीन है । इस मन्दिर में यात्री के ठहरने की सुविधा तथा भोजनालय व सूचनाकेन्द्र हैं । इसके अतिरिक्त मन्दिर के परिसर में उन प्रतिमाओं का प्रदर्शन किया गया है जो राजगिर के वैभवगिरि पर्वत से प्राप्त हुई थी। सभी प्रतिमाएं आठवीं सदी के करीब की हैं । अधिकतर लाल पत्थर और काले पत्थर की हैं । मन्दिर भव्य है, यात्रीओं से भरा रहता है । इसमें सटा श्वेताम्बर जैन मन्दिर का परिसर है । यहां धर्मशाला, भोजनालय व सूचनाकेन्द्र हैं । धर्मशाला प्राचीन है । दोनों परसरों में पर्वत चढ़ने के लिये डोली वालों

की भी अच्छी सुविधा है । श्वेताम्बर मन्दिर भूचाल का शिकार हो गया था । अभी इस मन्दिर का समान एक भव्य परिसर में रखा है । इसे नौलक्खा मन्दिर कहते हैं । इस पत्थर की इमारत पर उस जमाने के नौ लाख रुपये खर्च आये थे । यहां प्राचीन मन्दिर की समस्त प्रतिमाएं विराजमान हैं । यह एक प्राचीन शिलालेख मन्दिर में लगा हुआ है । इसकी भाषाएं संस्कृत हैं । यह मन्दिर लाल पत्थर का बना हुआ है । यहां मूल नायक भगवान मुनि सुव्रत स्वामी की भव्य श्यामवर्ण की प्रतिमाएं हैं । यहां सीमंधर स्वामी की प्रतिमा भी है । मन्दिर के अन्दर छत पर लाल कमल काफी वजन का है । हम अभी बस स्टैंड पर ही घूम रहे थे । अब हम तीर्थदर्शन करके वीरायतन पहुंचे पर रास्ते में विचार आया कि अभी दिन काफी पड़े हैं, क्यों न राजगिर की इमारतों के दर्शन करें । हमने गर्म पानी के कुंड देखे, वहां से टांगा लिया, टांगे वाला एक छोटी उम्र का लड़का था, उसने पूछा साहब कहां जाना है ? मैंने कहा, "जो यहां देखने योग्य इमारते हैं, वहां घुमाकर वीरायतन छोड़ दो । टांगे वाला १६-१७ साल का बच्चा था । वह इस क्षेत्र का काफी जानकार था । टांगे वाला बड़ा दिलचस्प था । उसने हमें बताया कि मैं वीरायतन में साध्वी मां चन्दना के यहां से ५ जमात तक पढ़ा हूं । उन्होंने हमें नवकार मंत्र, तिक्खतो का पाठ व २४ तीर्थंकरों के नाम सिखावे हैं । मुझे मांस अण्डे का त्याग करवाया है । मुझे मेरे हर कार्य में हर प्रकार से सहायता की है । हर दोपहर को मैं अपने गुरु को वन्दना करने जाता हूं ।" फिर उसने हमें नवकार मंत्र सुनाया । उस बालक को देखकर साध्वी चन्दना के काम का अंदाजा लगा लिया ।

जब वीरायतन का यह स्थान खरीदा गया तो ५ बीघे

में कुछ झोंपड़ियां डाली गई । चोर, डाकू का आतंक हर समय रहता था, पर साधु बन्दना ने कुछ ही समय से आसपास के गांव के लोगों को अपना लिया । अब वह उनकी धर्म की माता है । तांगा गर्म पानी के झुंडों से आगे बढ़ रहा था । रास्ते में गुरुद्वारा साहिब के दर्शन किये, फिर हम सोनभंडार गुफा की ओर बढ़ने लगे ।

सोन भंडार :

सोन भंडार गुफा एक जंगल में पड़ती है । इस गुफा के आगे का हिस्सा गिर चुका है । अन्दर के हिस्से में २४ तीर्थकरों की प्रतिमाएं अंकित हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि इस गुफा के पास ही एक और गुफा जैन मन्दिर है, जो मात्र खण्डहर है, वहां पहुंचने का स्थान लम्बा है । यह चौथे पहाड़ की तलहटी में है । इस गुफा का इतिहास बहुत महत्वपूर्ण है । किवंदती है कि जब राजा कोणिक ने अपने पिता श्रेणिक को कैद कर लिया, तब कोणिक की माता चेलना ने अपना खजाना इस गुफा में छिपाकर रखा, उसे विशाल पत्थर से बंद कर दिया और ऊपर गुप्त लिपि में एक शिलालेख लिखवा दिया । एक शिलालेख उस पत्थर पर है जिसकी लिपि पढ़ी नहीं गई है । इस गुफा का सम्बन्ध गणधर गौतम से बताया जाता है । कहीं तक इस गुफा में अनेकों मूर्तियों का निर्माण किया था । लोगों का मानना है कि इस गुफा में रानी चेलना ने सोना छिपाकर रखा है ।

सोनभंडार गुफा देखने के बाद हम बाहर सड़क पर आये । वर्षा का वेग अचानक आया । उस समय हमें इस गुफा में शरण लेनी पड़ी । वापसी पर हमने एक और इतिहासिक इमारत का अवलोकन किया । उस इमारत का नाम था मणिकार मठ । अब यहां एक स्तम्भ ही है जिसे छप्पर से सुरक्षित किया गया है । यहां विशाल खण्डहर हैं ।

कहते हैं कभी यहां शालिभद्र का भव्य महल था । दोनों इमारतों के बाहर पुरातत्व विभाग के सूचना पाटिका लगी है । जिसमें यह ज्ञात होता है ।

शाम अंधेरे का रूप ले रही थी । हम दिन का आनन्द लेना चाहते थे । इतनी लम्बी यात्रा की थकावट हो चुकी थी । हम आगे बढ़े । जहां मण्डीकुक्षी के चैत्य के पास बौद्ध विहार के खण्डहर थे । बौद्ध लोग इस स्थल पर विपुल यात्रा में घूम रहे थे । श्रीलंका में भिक्षु हमें पहले दिन मिल चुके थे । यह भिक्षु जापान के थे । यह अच्छी अंग्रेजी बोल लेते थे । बौद्ध भिक्षु गुजारे के लिये कुछ पैसा रख सकते हैं । पर त्याग-वैराग्य ज्ञान में वह सम्पन्न हैं ।

हमारी उनसे जैन व बौद्ध धर्म के सम्बन्धों के बारे में चर्चा हुई । यह बदकिस्मती है कि संसार में लोग जैन धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानते । इसका कारण हमारी प्राचीन परम्पराएं हैं । आज इन परम्पराओं का पूर्व मूल्यांकन करने की जरूरत है । आज प्रचार की जरूरत है । अब हमारा समाज इस बात की आवश्यकता समझने लगा है । इसी कारण आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज भारत से बाहर विदेश में घूमे और उन्होंने विदेशों मे अनेकों मन्दिर व आश्रमों की स्थापना की । थकावट से हम चूर हो चुके थे । हम वीरायतन में वापस आए । वीरायतन की स्थापना भगवान महावीर का निर्वाण ई० २५०० महोत्सव पर भारतीय संस्कृति के दार्शनिक श्रमण राष्ट्रसंत उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म० की कल्पना अनुसार साध्वी आचार्य चन्दना जी दिशानिर्देश में हुई । हमें रास्ते में एक बौद्ध भिक्षुणी भी मिले । जो गर्मकुण्ड क्षेत्र में यात्रा कर रही थी, वह अंग्रेज थी । उसने हमें बताया कि उसका मठ श्रीलंका में है । कुछ समय के बाद हम वीरायतन के द्वार पर थे । वीरायतन अपने

आपे में एक ऐसी संस्था है जो कला, सांस्कृति, इतिहास, साधना, सेवा व साहित्य का संगम है । यहां हम रात्रि के ६ वजे पहुंचे । सर्वप्रथम गुरुदेव श्री अमरमुनि जी म० के दर्शन किये । रात्रि काफी हो चुकी थी, हमने उन्हें अपने आने की सूचना दी । उनके एक शिष्य ने हमें कविश्री के साहित्य भण्डार के दर्शन करवाये । हमने उनके कुछ प्रकाशन खरीदे ।

मुझे यहां एक घटना का संस्मरण आता है जब मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन ने कहा, "गुरुदेव मैं मालेरकोटला से आया हूं ।" गुरुदेव ने अन्दर से फुरमाया, "क्या साथ में पुरुषोत्तम है तो अच्छी बात है ।" मैंने हामी भरी । मैंने उन्हें बताया कि मैं आपके दर्शनों के लिये विशेष रूप से आया हूं । गुरुदेव ने कहा-"भैया रात्रि हो चुकी है, कल मिलेंगे, खूब बातें करेंगे, अभी तुम सो जाओ ।" हमने गुरुदेव को पुनः वन्दन किया और अपने रहने की व्यवस्था के स्थान पर चले गये ।

वीरायतन में रहने, घूमने व भोजन की सुन्दर व्यवस्था है । राजगृही हर प्रकार से इतिहासिक स्थल है । यह मात्र जैनों का नहीं, हर धर्मावलम्बी यह ठहर सकता है। मुनियों के प्रवचन सुन सकता है । वैभारगिरी आदि पर्वतों की यात्रा कर सकता है । यही सप्तपर्णी गुफा है, जहां रोहणी चोर रहता था । यही १९६२ में उपाध्याय श्री अमरमुनि जी ने अपना चातुर्मास ध्यान अवस्था में बिताया । तभी उन्हें प्रेरणा मिली । जिसक परिणाम वीरायतन के रूप में आया।

१९७५ को महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसर पर यह कार्य शुरु हुआ, यह निर्माण का कार्य है जो अब भी चालू है । १०० एकड़ भूमि पर भव्य परिसर में बहुत इमारतें बन चुकी है । भविष्य में अन्य योजनाओं पर काम जारी

है । असल में वीरायतन राजगिर की जान है । आज इसी वीरायतन की ब्रांच पूना, अहमदनगर, में स्थापित हो चुकी है । अब विदेशों में इंग्लैंड, अमेरिका, अफ्रीका में इसकी ब्रांचें कायम हो चुकी है । गुजरात के भूचाल में इस संस्था ने महत्वपूर्ण कार्य भूचाल पीड़ितों की सहायता के लिये किया है । यह कार्य आचार्य चन्दना जी के नेतृत्व में हो रहा है । यहां ३०० बिस्तरों का आंखों का हस्पताल है । अभी-अभी इसकी एक ब्रांच प्रभु महावीर के जन्म स्थान लछुवाड़ (क्षत्रिय कुण्डग्राम) में खुल चुकी है । इस परिसर में बैंक, पुलिस स्टेशन, तीन प्रवचन कक्ष, २०० से ज्यादा यात्रियों के रहने के लिये धर्मशाला, हस्पताल, ब्राही कला मन्दिर, पुस्तकालय व शिक्षा निकेतन उल्लेखनीय हैं । अब उपध्याय श्री अमरमुनि जी का देवलोक हो चुका है उनकी समाधि भी यहां निर्मित की गई है । हम अपने कमरे में ठहरे । सुन्दर हवादार कमरे में हर प्रकार की व्यवस्था थी । हमें रात्रि को भोजन खाना पड़ा ।

मेरे धर्मभ्राता रवीन्द्र जैन ने इतनी थकावट के बाद रात्रि को अपने वस्त्र साफ किये । गर्मी के कारण वस्त्र रोजाना गन्दे हो जाते थे । उसके बाद फिर कपड़े वीरायतन मार्किट के धोवी को दिये । हम सारी रात अगले दिन का कार्यक्रम बनाते रहे । गर्मी के बाद पर्वत की चोटीयों से मन्द हवा आ रही थी । दूसरे दिन हमारा कार्यक्रम बहुत व्यापक था ।

दूसरा दिन :

दूसरे दिन हम सुबह उठे । बाहर दुकान से चाय पी, फिर गर्म पानी के कुण्डों में स्नान किया । यह स्थल हिन्दूओं का भी तीर्थ है । यहां अनेकों हिन्दू मन्दिर हैं, हजारों यात्री

स्नान करते हैं । मुस्लमान व इसाई तक आते हैं । यह प्रकृति का चमत्कार है । स्नान के बाद गुरुदेव राष्ट्रसंत उपाध्याय श्री अमरमुनि जी म० के दर्शन किये । उन्हें अपना कार्यक्रम बताया । उपाध्याय श्री जी से हम १९७२ से परिचित थे । उनसे पत्र-व्यवहार बना हुआ था । उनकी पत्रिका श्री अमर भारती से हम जुड़े हुए थे । वीरायतन तें विश्व भर के लोग आते हैं, कविजी वृद्ध अवस्था में भी शास्त्रों का स्वाध्याय कराते रहे ।

उपाध्याय श्री के शिष्यों ने हमें यात्रा में भरपूर सहयोग दिया । उनके प्रवचन नहीं सुन सके क्योंकि सुबह ही हम पहले पहाड़ वैभवगिरि की यात्रा को चल पड़े ।

वैभारगिरि :-

इस पहाड़ के शुरु में ही बौद्ध संगीती चबूतरा है, जहां इस बारे में सूचना पटिका लगी है । इस पहाड़ की ५३१ सीढ़ियां हैं । यह सीढ़ियां बहुत थकान वाली हैं । यहां पर पांच मन्दिर हैं जिनमें भगवान महावीर स्वामी, भगवान मुनि सुव्रत स्वामी, श्री धन्ना शालिभद्र तथा गणधर गौतम स्वामी की प्रतिमायें व चरण हैं । इसी पर्वत पर ८वीं सदी के प्राचीनतम जैन मन्दिर की प्रतिमाएं हैं । मन्दिर की इमारत गिर चुकी है । सप्तपर्णी गुफा इसी पर्वत पर है, जहां १९६२ में उपाध्यायश्री अमरमुनि जी ने चतुर्मास किया था । वैभारगिरि पर्वत हरा-भरा पहाड़ है, भूमि पथरीली है। पशु चरने के लिये इन पहाड़ों पर उगी हुई घास से अपना पेट भरते हैं । इस पर्वत की दो चढ़ाईयां हैं, पहली चढ़ाई चढ़ने के बाद पहले श्वेताम्बर मन्दिरों के दर्शन होते हैं । मन्दिर तो बाद का बना हुआ है, परन्तु इसमें विराजमान प्रतिमाएं बहुत प्राचीन हैं । यहीं मन्दिर के पुजारी ने हमें पूजा का लाभ प्रदान किया। फिर हम दिगम्बर जैन मन्दिरों की ओर

बढ़े । वहां पूजा की । यहां अधिकांश तीर्थंकरों के चरण हैं । फिर इसी पहाड़ के ऊपर १ किलोमीटर सीधी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है । वहां एक वृक्ष के पीछे ११ गणधरों के चरण चिन्ह हैं । यह माना जाता है कि इस पहाड़ पर गणधरों का निर्वाण हुआ था ।

फिर हम वापसी उतरे । पहाड़ में एक मार्ग अलग आता है उस मार्ग के रास्ते में एक ८वीं सदी के मन्दिर के खण्डहर देखे । इसमें २४ तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं पर यह मन्दिर सरकारी स्मारक है । यह कभी प्राचीन तीर्थस्थल का मुख्य केन्द्र रहा होगा । इसके आगे इसी काल का शिव मन्दिर भी इतना प्राचीन ही है । यह मन्दिर सुरक्षित है । यहां रात्रि दर्शन व पूजा करते हैं । मैं भी वहां दर्शनार्थ गया । इस स्थान के बिल्कुल सामने चोटी पर धन्ना शालिभद्र का मन्दिर है । यह भारतवर्ष का अपने ढंग का अकेला मन्दिर है । धन्ना शालिभद्र की कहानी में हम बता चुके हैं कि शालिभद्र कितना वैभव सम्पन्न था कि राजा श्रेणिक तक नहीं जानता था । जब श्रेणिक की रानी चेलना ने रत्न कम्बल की जिद्द की तो पहले अपना दाम सुनकर वह चुप हो गया, पर रानी के त्रिया हठ के आगे झुकना पड़ा । व्यापारियों की तलाश की, व्यापारीयों का दल मिला । उन व्यापारियों ने कहा, "महाराज ! आपके शहर की एक ही महिला ने हमारे सारे कम्बल खरीद लिये हैं । उसने हमें यह भी कहा है कि मेरी ३२ बहुएं हैं पर कम्बल १६ हैं । उसने तो इन कम्बलों को पैर पोंछने के लिये अपनी पुत्रवधु को दे दिया है ।"

राजा श्रेणिक शालिभद्र की सम्पन्नता से हैरान हो गया । वह शालिभद्र की माता भद्रा सेठानी को मिलने आया । सात मंजिला महल था । शालिभद्र की माता सारा

कार्यभार देखती थी । उसका नाम भद्र था । भद्र सेठानी ने राजा का घर पर सम्मान किया, फिर अपने पुत्र को पुकारा, "बेटे ! नीचे आओ, श्रेणिक आये हैं ।"

पुत्र ने उत्तर दिया, "माता जी ! आज मेरी क्या जरूरत है, श्रेणिक आया है तो उसे किसी भण्डार में रखवा दो ।"

माता शालिभद्र की अज्ञानता से दुःखी हो गई । उसने कहा, "महाराज ! मेरा लड़का दुनिया से बेखबर है, वह अपनी ३२ पत्नीयों के साथ कामभोग में डूबा रहता है, उसका अपराध क्षमा करें ।"

माता ने पुनः शालिभद्र को पुकारा, "बेटा ! हमारे स्वामी महाराज श्रेणिक आए हैं, तुम उन्हें आकर प्रणाम करो ।"

माता की बात सुनो तो शालिभद्र को एक चोट लगी । उन्होंने सोचा क्या मेरा भी कोई स्वामी है ?

सेठ शालिभद्र नीचे आये । राजा श्रेणिक के चरण छुए । राजा को भोजन करवाया, उपहारों से राजा को सम्मानित किया ।

फिर किसी समय श्रमण भगवान महावीर धर्मप्रचार करते राजगृह के गुणशील चैत्य में पधारे । राजा श्रेणिक ने घोषणा करवाई । राजा श्रेणिक सपरिवार प्रवचन सुनने आया । इस प्रवचन में शालिभद्र, उसकी पत्नीयां व माता पधारे । शालिभद्र ने प्रवचन सुना । उस पर वैराग्य का रंग चढ़ आया । उसने प्रभु महावीर के सामने प्रतिज्ञा की-आज से मैं रोजाना एक-एक स्त्री को छोड़ूंगा । इस बात की सूचना शालिभद्र की बहिन व बहनोई को लगी । बहिन दुःखी रहने लगी । एक दिन वह पति के केश संवार रही थी कि उसकी बहिन की आंखों में आंसू आ गये । पति ने

आंसूओं का कारण पूछा । पत्नी ने कहा, मेरा अकेला भाई साधु बनने जा रहा है, वह एक-एक पत्नी रोजाना छोड़ रहा है ।''

धन्ना ने कहा, ''सेठानी ! तुम्हारा भाई बुजदिल है, यह कोई त्याग है ? यह तो त्याग का मजाक है, अगर छोड़ना है तो सारी पत्नियों को एक साथ क्यों नहीं छोड़ देता ?''

सेठानी ने कहा, ''पतिदेव ! कहना सरल है, पर संयम व त्याग पर चलना कठिन है । अगर आप एक पत्नी को त्याग नहीं सकते तो जिसकी ३२ पत्नीयां हैं वह कैसे त्यागेगा ?''

पत्नी की बात सुनकर धन्ना का आत्मदेव जागा, उसने बलपूर्वक कहा, ''आज से मैं आप सभी का त्याग करता हूं ।'' इतना कहकर वह घर से अपने ससुराल घर में आया । शालिभद्र को ललकारते हुए कहा, ''तू कायरों की भांति एक-एक पत्नी को छोड़ने का दम्भ क्यों भरता है, छोड़ना है तो सबको एक साथ छोड़ो जैसे मैंने छोड़ा है।

शालिभद्र की आत्मा जागृत हुई । शालिभद्र व उसकी माता व ३२ पत्नियों ने गृह-त्याग संयम का मार्ग ग्रहण किया । धन्ना ने सपरिवार दीक्षा ग्रहण की । उनकी स्मृति को समर्पित यह जैन मन्दिर है । जो इस पर्वत पर शान से खड़ा है। यह मन्दिर मणिकार मठ के पास है । भारत में ऐसा अकेला जैन मन्दिर है जहां दोनों जीजा-साला की गृहस्थ अवस्था में प्रतिमाएं हैं । वापिस उतरते ही हमने वह स्थान भी देखा जहां उपाध्याय श्री अमरमुनि जी ने प्रवास किया था, सप्तवर्णी गुफा देखी, जहां कभी रोहिणी चोर ने लोगों को आतंकित किया था, इस चोर को मंत्री अभयकुमार ने अपनी चतुराई से पकड़ा था । पहाड़ के नीचे उतरे हमें यह बताया गया कि यह गुफा अन्दर से काफी लम्बी है ।

यह गया के पहाड़ों तक जाती है । इस के गीलेपन को मैंने भी देखा । यह सम्पदा आज भी भारतीय इतिहास की अनेकों गाथाएं छुपाये हुए हैं । हम पहाड़ से नीचे उतरे । सीधा वीरायतन कवि जी महाराज के दर्शन किये । उन्होंने मेरे सन्मार्थ प्रोग्राम बना रखा था, जिसका समय ३ बजे दोपहर था, हमारे पास खुला समय था । हमने यहां भोजन किया । भोजन राजस्थानी था । तब श्री फिरोदीया जी इस संस्था की देखरेख करते थे । आचार्य चन्दना विदेश गई हुई थी । हमें जानकर प्रसन्नता हुई कि कवि जी महाराज का सारा साहित्य प्रकाशित होने लगा है । इस क्षेत्र की प्रगति बहुत महत्वपूर्ण है ।

ब्राह्मी कला मन्दिर :

यह कला व इतिहास की एक प्रदर्शनी है । विभिन्न पैनलों द्वारा भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक का सारा जैन इतिहास प्लासटिक आफ पैरिस से जीवित किया गया है । सारे संसार में ऐसा कोई संग्रहालय नहीं । यह साध्वी चन्दना जी की अपनी देन है । अब तो इंग्लैंड, अमरीका में ऐसे जैन म्यूजियम स्थापित हो चुके हैं । साधारण टिकट से यहां प्रवेश किया जा सकता है । इसमें मात्र तीर्थंकर तक का वर्णन नहीं बल्कि भगवान महावीर के बाद हुए प्रभाविक आचार्यों की जीवन गाथा का वर्णन इस मन्दिर में देखने को मिलता है । यहां तक उपाध्याय श्री अमरमुनि जी के जीवन से सम्बन्धित अनेकों पैनल यहां बने हैं । इसी परिसर में एक समोसरण की रचना की गई है । असल में वीरायतन जो प्राचीन वैभवगिरि पर्वत की तलहटी में स्थापित है । यह गुणशील चैत्य की भूमि है । इस चैत्य का विस्तार बड़ा था । गुणशील व राजगृह, श्रेणिक राजा इन